# महत्वपूर्ण तथ्य

① 1921 ई० से लेकर वर्तमान समय तक हड़प्पा कालीन सभ्यता से सम्बन्धित लगभग 400 स्थानों का उत्खनन कराया जा चुका है और 1000 स्थानों का पता लगाया गया है जिससे भारत और पाकिस्तान उपमहाद्वीप में 4000 वर्षों से अधिक प्राचीन विकसित और समृद्ध सभ्यता का एक सुस्पष्ट चित्र दृष्टिगोचर होता है।

② 1947 में भारत विभाजन के बाद सभी प्रसिद्ध हड़प्पा कालीन स्थल जैसे हड़प्पा मोहनजोदड़ो, चान्हुदारो इत्यादि पाकिस्तान में चले गये तथा इस सभ्यता के केवल सीमा स्थल पर केन्द्रीय पंजाब में सतलज नदी के किनारे रोपड़ के समीप कोटला निहंगखान और काठियावाड़ गुजरात में भादर नदी के किनारे रंगपुर भारतीय क्षेत्र में रह गये

③ विभाजन के पश्चात् लगभग 40 वर्षों में पाकिस्तान के सीमा के समीपवर्ती क्षेत्रों में विशेषतः पंजाब हरियाणा, राजस्थान और गुजरात में सिन्धु सभ्यता के विभिन्न स्थलों का पता लगाने के लिए सुनियोजित कार्य प्रारम्भ हुआ।

④ आर० ए० घोष ने 1951-52 में घग्घर नदी के किनारे खोज कार्य प्रारम्भ किया और भारत की वर्तमान सिमाओं के अन्दर लगभग 25 हड़प्पा कालीन स्थलों का पता लगाया जिसमें से राजस्थान का कालीबंगा उल्लेखनीय है जो हड़प्पा पूर्व युग से पूर्ण विकसित हड़प्पा युग तक के विभिन्न चरणों के क्रमिक विकास उपलब्ध कराता है

नोट- आजादी के बाद सबसे अधिक गुजरात राज्य में खोज की गयी है।

## कालक्रम

① सर जॉन मार्शल - 3250 BC से 2750 BC
② मैके — 2800 BC to 2500 BC
③ M.S. वत्स — 3500 BC to 2500 BC
④ हीलर — 2500 BC to 1700 BC
⑤ Dells — 2900 BC to 1900 BC
⑥ D.P. Agrwal ने C.14 परीक्षण - (कार्बन डेटिंग प्रोसेस) के आधार पर सिन्धु सभ्यता का निर्धारण 2300 BC to 1750 BC किया है।

Scanned by TapScanner

# हड़प्पा पुर्व एंव हड़प्पा संस्कृति का कालानुक्रम 5500 BC to 3500 BC तक नव पाषाण युग

① बलुचिस्तान एंव सिंध के मैदानी भागों में बस्तियां उभरी लोग पशु चराने के साथ-साथ थोड़ा बहुत खेती का कार्य भी करते थे इस प्रकार स्थाई गाँव का उद्भव हुआ।

Scanned by TapScanner

(2) इस युग के लोग गेहूँ, जौ, खजूर तथा कपास की खेती की जानकारी रखते थे तथा भेड़ बकरियों एवं मवेशियों को पालते थे खाद्य के रूप में मिट्टी के मकान मिट्टी के बर्तन और दस्तकारी की वस्तुएँ मिली है।

नोट - (1) यद्यपि विश्व के संदर्भ में नव पाषाण युग का आरम्भ 9000BC से माना जाता है लेकिन दक्षिण एशिया में जो सबसे प्राचीन सुजीव नवपाषाण युगीन बस्ती मिली है, वह मेहरगढ़ (पाकिस्तान के प्रान्त बालुचिस्तान में है और इसका काल 7000BC निर्धारित किया गया है।

(2) विन्ध्य पर्वत माला के दक्षिण स्कन्धों पर मिली कुछ नव पाषाण युगीन बस्तियां लगभग पांचहजार BC तक पुरानी हो लेकिन दक्षिण भारत की ऐसी बस्तियां कदाचित 2500BC से अधिक प्राचीन न हैं। जबकि दक्षिण तथा पूर्वी भारत की कुछ बस्तियां बहुत बाद के काल की यानी 1000BC की है।

B | 3500 BC से 2600 BC — आरम्भिक हड़प्पा काल

(1) इस काल में पहाड़ी एवं मैदानों में बहुत सी बस्तियां स्थापित हुई इसी समय गाँव सबसे अधिक समय में आबाद हुए मिट्टी तांबा, चाक और हल का प्रयोग कर कई प्रकार के मिट्टी के अद्भुत बर्तन बनाये गये थे जिससे कई क्षेत्रीय परम्पराओं के आरम्भ का पता चलता है।

(11) साझी सिन्धु घाटी के अन्नभंडार ऊंची, ऊंची दिवारें और खुदरा व्यापार के प्रमाण मिले है। सम्पूर्ण क्षेत्र में मिट्टी के बर्तनों की एकरूपता पायी गई है इसके साथ साथ कुबड़ वाला बैल, पिपल, दो सींगों सिंह वाले देवता की आकृति इस काल में मिलती है

C | 2600 BC से 1800 BC — पूर्ण विकसित हड़प्पा युग
2200 BC से 2000 BC — हड़प्पा काल का क्रमिक पतन काल

समान आकार की ईंटो का निर्माण हुआ, मुहरों का निर्माण हुआ, नियोजित ढंग से शहरों की स्थापना हुई। और दूर-दूर के स्थानों से व्यापार हुआ

## (B) 1800 BC के बाद - उत्तर हड़प्पा काल

(1) हड़प्पा सभ्यता की बहुत से शहर खाली हो गये, अन्तर्क्षेत्रीय विनिमय में ह्रास हुआ, लेखन कार्य और शहरी जीवन का त्याग दिया गया

(2) हड़प्पा सभ्यता के शिल्प और मिट्टी के बर्तनों को बनाने की परम्परा जारी रही। पंजाब सतलज यमुना की ग्रामीण संस्कृतियों का विभाजन और गुजरात मे हड़प्पा की शिल्प और मिट्टी के बर्तनों के परम्परा को अपनाया जाने लगा।

## स्थिती एंव कार्य

(1) सर्वप्रथम इसकी खुदाई पाकिस्तानी पंजाब के हड़प्पा नामक स्थान में 1921 ई० में हुआ था

(2) साधारणतया इस सभ्यता के लिए तीन नामों का प्रयोग किया जाता है - सैन्धव सभ्यता, सिन्धु घाटी की सभ्यता और हड़प्पा सभ्यता

(3) जिस समय यह सभ्यता प्रकाश में आयी थी उस समय लोगों में यह मान्यता थी की यह सभ्यता सिन्धु नदी के किनारे ही विकसित हुई थी अतः विद्वानों ने इसे "सिन्धु घाटी की सभ्यता" कहकर सम्बोधित किया लेकिन बाद में अनेक जगहों के उत्खनन के उत्खनन पश्चात हमे यह ज्ञात हुआ की यह सभ्यता सिन्धु घाटी के क्षेत्र के बाहर भी विकसित थी अतः इसके नाम का औचित्य नही रह गया। की इस सभ्यता का सर्वप्रथम उत्खनन हड़प्पा नामक स्थान पर हुआ था अतः इस सभ्यता का सबसे उपयुक्त नाम "हड़प्पा सभ्यता" होगा

नोट: सिन्धु घाटी की सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता के नाम से सम्बोधित करने वाले प्रथम विद्वान सर जॉन मार्शल थे।

(4) हड़प्पा से संबंधित समूचे सिन्ध तथा बलूचिस्तान में और लगभग पूरे पंजाब (पूर्वी और पश्चिमी), हरियाणा, प० उत्तर प्रदेश, द० जम्मू और कश्मीर, उत्तरी राजस्थान, गुजरात तथा उत्तरी महाराष्ट्र में फैली हुई थी।

(5) इसकी प० सीमा बालुचिस्तान के सुतकांगेडो और पूर्वी सीमा उ.प्र० के मेरठ जिले के आलमगीर पुर तक विस्तृत थी इन स्थानों की बीच की दूरी 1600 KM है।

(6) उत्तरी सीमा पंजाब में रोपड़ से, दक्षिणी सीमा गुजरात में किमखागर संगम पर भगत राव के बीच की दूरी लगभग 1100 KM है।

(7) N.C.E.R.T के अनुसार पूरा हड़प्पा क्षेत्र लगभग 13 लाख वर्ग KM है।

(8) भारत में हड़प्पा संस्कृती का विकास उसी समय हुआ जब एशिया और अफ्रिका के अन्य भागों में दजला फरात, नील नदी और हाँग्हो नदी की घाटी में दूसरी सभ्यता फल फुल रही थी।

(9) उस समय मिस्र में पिरामीडा के निर्माण करने वाले हड़प्पा (प्राचीन मिस्र में राजा की उपाधि) की सभ्यता थी आज जो प्रदेश इराक के नाम से जाना जाता है वहां मेसोपोटामिया की सभ्यता (सुमेरी सभ्यता) थी जबकी चीन में हाँग्हो नदी की सभ्यता थी इसी नदी को पीली नदी के नाम से भी जाना जाता है जिसे चीन का शोक कहा जाता है।

Scanned by TapScanner

# हड़प्पा कालीन प्रमुख नगर

साधारणतया विद्वान हड़प्पा कालीन स्थलों को मुख्यतः तीन भागों में बांटते हैं —

A — केन्द्रीय नगर

B — त्रैयीय नगर और पत्तन

C — अन्य नगर और कस्बे

## केन्द्रीय नगर

**① हड़प्पा** → ① हड़प्पा पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त के मोन्टगोमरी जिले में रावी नदी के बायें तट पर अवस्थित है और यह सैन्धव सभ्यता का आदि महत्वपूर्ण स्थल है क्योंकि सबसे पहले यहीं पर इस सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए थे

② इस स्थल पर दो विशाल और समूचे ध्वंसावशेष टिले थे — पूर्वी और पश्चिमी

पूर्वी खण्ड का उत्खनन अभी नहीं हो पाया है।

③ हड़प्पा का पश्चिमी टिला समानान्तर चतुर्भुज के समान है जो उत्तर से दक्षिण 420 मी० और पूरब से पश्चिम 196 मी० लम्बा एवं चौड़ा था। इस किले के दिवारों पर स्थान-स्थान पर बुर्ज बनाकर मजबूत किया गया था इस किले के अन्दर चबूतरों पर पक्की ईंटों से भवनों को क्रमशः 6 चरणों में निर्मित किया गया था।

④ हड़प्पा के इस किले के बाहर में वत्स एवं डिसन ने खुदाई की थी किले के बाहर कुछ ऐसे भवन हैं जिनको पहचान कर्मचारियों के मकान, दस्तकारी के मंच और 275 वर्ग मी में फैले अन्नागार से की गयी है।

⑤ हड़प्पा के किले में आने जाने का मुख्य मार्ग उत्तर में था इस उत्तरी प्रवेश द्वार और रावी नदी के किनारे के बीच एक अन्नभण्डार, श्रमिक आवास और ईंटों से बने गोल चबूतरे थे जिसमें अनाज रखने के लिए (कोठार) बने थे। सामान्य आवास क्षेत्र के दक्षिण में एक कब्रिस्तान भी मिला है।

⑥ कर्मचारियों के आवास किले के उत्तर पश्चिमी बुर्ज के कोने में एक ही आकार के 10 छोटे-छोटे आयताकार भवन हैं जिनका आकार 17×7.5 मी० है।

Scanned by TapScanner

(7) कर्मचारियों के इन आवासों के निकट नाखपाती के आकार वाली 16 भट्ठीयां थी जिनसे लकड़ी का कोयला एवं गोबर की राख पायी गयी है। इन भट्ठीयों से कुछ ऊंचाई पर कांसे को पिघलाने के लिये प्रयुक्त होने वाली घड़ीयां पायी गयी है।

(8) इन भवनों के समूह से 32 मी० दूर अन्नागार पाये गये है जिनमें प्रत्येक का आकार 15.24 X 6.10 मी० था जिन्हे 6-6 अन्नागारों के दो समूहों में बनाया गया है जिसके बीच सात मी० चौड़ा रास्ता था कोठारों के फर्श में खुला फर्श है और उसपर दो कतारों में ईंट के वृत्ताकार चबूतरे बने हुए है इसका उपयोग फसल दाबने काम में होते थे क्योंकि फर्श की दरारों में गेहु और जौ के दाने मीले है

(9) हड़प्पा में दो कमरे वाले बैरक थे जो शायद मजदूरों के रहने के लिये थे।

(10) हड़प्पा में 89 मुहरें प्राप्त हुई है जिनपर अंकित अभिलेख सिन्धु सभ्यता से प्राप्त अभिलेखों का एक तिहाई अंश है अर्थात सिन्धु सभ्यता की अभिलेख युक्त मुहरें सर्वाधिक हड़प्पा से ही प्राप्त होती है।

(11) हड़प्पा से पत्थर की दो छोटी-छोटी मूर्तियां भी मिली है जो किसी अन्य समकालीन नगर से प्राप्त नहीं हुई है जिनमें एक लाल पत्थर की बनी पुरुष की निर्वस्त्र धड़ की आकृति है। जिसकी तुलना "जीन" या यक्ष के साथ की जाती है। और दूसरी एक नृत्यांगना की नृत्य करती हुई मूर्ति है जिसकी कुछ इतिहासकारों ने "नटराज शिव" के साथ तुलना की है

(12) हड़प्पा के किले के दक्षिण में एक शव स्थान पाया गया है जिसे पुरातत्वविदों ने "R.37" हड़प्पा की खुदाई से हड़प्पा विभिन्न प्रकार के 57 शवधान भी पाये गये है। इन शवधानों में कंकालों को मृतक उपभोग वस्तुओं के साथ गड्ढे में दफना दिया जाता था इस प्रकार के कुछ गड्ढों के पास आग जलाने के भी प्रमाण मिले है। 12 शवधानों से कांस्य दर्पण भी पाये गये है। एक से सुरमा लगाने वाली सलाई एवं एक से स्त्री की चम्मच एवं अन्य से पत्थर के फलक पाये गये है

(2) मोहनजोदड़ो

① मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ होता है "मुर्दों का टिला" या "मृतकों का टिला"

(2) यह पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त के लरकाना जिले में सिन्धु नदी के दाये किनारे पर अवस्थित है।

(3) मोहनजोदड़ो में दो टीले थे ——— पश्चिमी और पूर्वी पश्चिमी टीला कम ऊंचा एक नगर दुर्ग था जबकि पूर्वी टीला के नीचे मोहनजोदड़ो के निचले नगर के अवशेष दबे हुए थे।

(4) मोहनजोदड़ो के पश्चिमी टीले के ऊपर कुषाण बनावट ई०पूर्व का बौद्धस्तूप बना हुआ था/है।

(5) पश्चिमी खण्ड का सम्पूर्ण क्षेत्र गारे और कच्ची ईंटों का चबूतरा बनाकर ऊँचा उठाया गया है सारा निर्माण कार्य इस चबूतरे के ऊपर किया गया है इस खरे तल के आस पास कच्ची ईंटों से किलाबन्दी की दीवार बनी है। जिसमें मिनारें एवं बुर्ज बनी हुई थी इस किले बन्द हिस्से के मुख्य प्रवेश मार्ग का अभी तक पता नहीं चला है। इस खण्ड में अनेक सार्वजनिक भवन स्थित है जो स्पष्टतया महत्वपूर्ण थे इन भवनों के कार्य सूचक नाम दिये गये है जैसे अन्नागार, पुरोहित वास, महाविद्यालय भवन इत्यादि इस खण्ड की शायद सबसे अधिक रोचक विशेषता इसका विशाल स्नानागार या तालाब है।

(6) मोहनजोदड़ो का सबसे प्रसिद्ध भवन वह स्नानागार है जो उत्तर से दक्षिण 11.89 x 7.01 x 2.44 मी० है इसमें जल रिसाव को रोकने के लिये इसके किनारों पर चूने के गारे से ईंटों की गुड़ाई की गयी है और इसके ऊपर तारकोल की परत चढ़ाई गयी थी। इसके उत्तरी और दक्षिणी ओर सीढ़ियां बनायी गयी थी स्नानागार के लिये जल आपूर्ति समीपस्थ कक्ष में स्थित एक कुएं से होती थी इस स्नानागार का पानी समय समय पर खाली करने के लिये पश्चिमी ओर टेढ़ी नालियों के माध्यम से जल निकास प्रणाली विकसित की गयी थी इस स्नानागार का उपयोग पुरोहितों या किसी प्रकार के धार्मिक व्यक्तियों द्वारा किया जाता होगा।

(7) हड़प्पा वास्तुकृति की सबसे बड़ी इमारत है मोहनजोदड़ो का विशाल अन्नागार (कोठार) जो 45.71 मी० x 15.23 मी० लम्बा और चौड़ा है और यह स्नानागार के पश्चिम है इसका निर्माण विशाल स्नानागार से पहले हुआ था।

Scanned by TapScanner

(8) इस विशाल स्नानागार के पूर्वोत्तर में एक लम्बा भवन है जिसका एक बहुत उच्च अधिकारी के आवास और पुरोहितों के सभाकक्ष में प्रयोग किया जाता होगा।

(9) मोहनजोदड़ो में एक अन्य रोचक भवन पाये गये हैं जो इसके बने 20 स्तम्भों द्वारा निर्मित पांच पार्श्वों में विभाजित है प्रत्येक पार्श्वों में चार चार स्तम्भ है। पुरातत्वविद इसे महाविद्यालय की संज्ञा देते हैं।

(10) पूर्वी खण्डहर है यह किसी एक ही चबूतरे के ऊपर बनाया था इसे निचला शहर भी कहा जाता है। मोहनजोदड़ो के मकान बहुधा पक्की ईंटों से बने थे इनके कई कमरे दुमंजिले थे बनी थी और उनमें जल निकास का प्रबन्ध था क्योंकि ये सड़कों के नालियों से जुड़े थे नालियों में इस की तरह लगाई गई थी और बहुत सारी नालियां ऊपर से ढकी थी कुछ सार्वजनिक कुएं भी थे जीनमें ईंटों की तहें लगी थी

उ॰ [ धौलावीरा ]

(1) गुजरात के कच्छ जिले के भचाव तालुका में स्थित धौलावीरा भारत विभाजन के बाद खोजे गये हड़प्पा कालीन नगरों की शृंखला में एक नवीनतम खोज है

(2) यह वर्तमान भारत में खोजे गये हड़प्पा कालीन के विशाल तम नगरों में से एक है द्वितीय श्रेणी का दूसरा विशालतम नगर है हरियाणा में स्थित राखी गढ़ी

(3) धौलावीरा भारतीय उपमहाद्वीप का चौथा विशालतम हड़प्पा कालिन नगर है इस आकार के अन्य तीन नगर है।
— सिन्ध में मोहनजोदड़ो, बहावलपुर में गनेरीवाल और पंजाब में हड़प्पा।

(4) धौलावीरा की खोज सर्वप्रथम जगपति जोशी के द्वारा की गयी थी लेकिन इसकी व्यापक खुदायी 1990-91 में रविन्द्र सिंह बिष्ट के नेतृत्व में हुआ था।

(5) धौलावीरा में अनेक अद्वितीय विशेषताएं है जो किसी अन्य हड़प्पा कालीन सभ्यता से प्राप्त नहीं हुई है अन्य हड़प्पा कालीन नगर दो भागों में विभक्त था — नगर दुर्ग और निचला शहर लेकिन धौलावीरा तीन प्रमुख विभागों में विभक्त है जिसके दो भाग आयताकार दुर्ग या शाकीलों द्वारा पूरी तरह से

8 ख दुरुस्त है किसी भी अन्य हड़प्पा कालीन नगर में ऐसी उत्कृष्ट नगर योजना हम देखने को नहीं मिलती है।

(6) चौलाविरा में प्राचीर युक्त क्षेत्र दो प्रकार के है —
(1) आहाता ऊंचाई पर स्थित दुर्ग के अन्दर आवास सम्भवतः शासक वर्ग के लोग रहते थे

(7) चौलाविरा के मध्य या केन्द्र में स्थित प्राचीरयुक्त क्षेत्र जिसे (मध्यम) नाम दिया गया है यह शासक वर्ग के सम्बन्धियों या प्रशासकीय अधिकारियों के आवास के लिए प्रयुक्त किया जाता होगा। मध्यनगर या मध्यमा केवल चौलाविरा में पाया गया है

(8) निचला शहर था जिसमें गैर आवासीय क्षेत्र होंगे

(9) चौलाविरा के निवासियों द्वारा लिखित या अलिखित लिपि हड़प्पा मोहनजोदड़ो इत्यादि के समकालीन लिपि के समान है लेकिन चौलाविरा की पायी गयी लिपि के वर्ण काफी बड़े हैं उनमें से प्रत्येक 3.7 CM लम्बा और 2.7 CM चौड़ा है

Scanned by TapScanner